ॐ

श्री रूपसेन चरित्र

अनुवादक—
पन्नालाल शर्म्मा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

W-8801
ज्ञा-...-१११

श्री रूपसेन चरित्र ।

ट्रैक्ट नम्बर—२०२

मूल लेखक :—

श्री जिनसूर जी महाराज

अनुवादक ।

पं० पन्नालाल शर्म्मा ।

प्रकाशक—

मंत्री—श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसायटी,

अम्बाला शहर ।

बाबू तेलूराम मित्तल मैनेजर के प्रबन्ध से
मौडल प्रिंटिंग प्रेस, अम्बाला में मुद्रित ।

वीर सं २४५५ } मूल्य ≈) { विक्रम सं १९८५
आत्म सं ३३ } { ईस्वी सन् १९२९

श्री...सागरसूरि ज्ञानमन्दिर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

Serving JinShasan
080357
gyanmandir@kobatirth.org

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

"श्री रूपसेन चरित्र"।

भरत क्षेत्र में मगध देशान्तर्गत राजगृह नगर में यादव वंश के शिरोमणि श्री मन्मथराजा राज्य करते थे। उनकी सबसे बड़ी रानी का नाम मदनावती था। वे हमेशा ही न्याय पूर्वक प्रजा का पालन करते थे।

एक दिन वर्षा काल उपस्थित होने पर उनके नगर के निकट-ार्त्ती शीतल-जला नामक सरिता जल से परिपूर्ण बहने लगी।

राजा क्रीड़ार्थ नदी में नाव डाल कर भ्रमण करने लगे। सी अवसर पर राजा ने नदी में अनेक वस्त्राभूषणों से सुशोभित एक महा पुरुष को देखा, तथा कुतुहल से अपनी ाव उस के पीछे लगा दी।

राजा ज्यों २ उस महानुभाव के पीछे जाता था, वह हानुभाव त्यों २ उससे आगे बढ़ता तथा जल में डूबता जाता ा; यहां तक कि थोड़ी देर में राजा को उस महानुभाव का ात्र शिर ही दीखने लगा। राजा ने यह देख कर तुरन्त ही चार किया, "यह अवश्य ही कोई दैवी शक्ति है, इसे देखना ाहिये"।

इस तरह दौड़ धूप के बाद राजा ने देखा कि वह शिर हुत दूर जाकर जल में स्थिर हो गया। राजा तुरन्त ही उसके

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पीछे भागा और केशपाश से उस शिर को ऊपर उठाया, तो राजा के विस्मय का पारावार न रहा; क्यों कि उसके हाथ में मस्तक मात्र था। राजा ने खिन्न होकर पुनः नदी की ओर देखा, तो समस्तक ही वह पुरुष उसी प्रकार जाता दीखने लगा। विस्मययुत राजा को विश्वास हो गया कि यह सब मुझ कोई दैवीशक्ति है और कुछ नहीं।

तब राजा ने पूछा-"आप कौन हैं"? उत्तर मिला-"मैं देव हूँ"। "तुम कौन हो"? मन्मथ ने उत्तर दिया कि "मैं राजा हूँ"। तब वह शिर बोला "यदि तुम राजा हो तो तुमने मेरे साथ अन्याय क्यों किया? राजा की सब शरण होते हैं। मेरा शिर तुमने चोर की तरह क्यों पकड़ा?

क्यों कि—

"दुर्बलानामनाथानां बालवृद्धतपस्विनाम्।
परैस्तु परिभूतानां सर्वेषां पार्थिवो गतिः" ॥

अर्थात्—दुर्बल, अनाथ, बाल, वृद्ध तपस्वी, तथा दूसरों से सताये हुये को राजा के बिना गति नहीं।

तुम पांचवें लोक पाल हो! यदि आप ही मेरा पराभाव करेंगे तो बस होलिया? अतः आप मेरा मस्तक छोड़ दीजियेगा। राजा ने तुरन्त ही उसके मस्तक को छोड़ दिया। वह मस्तक तुरन्त ही हस्ती बन गया; राजा भी कुतूहल वश उस पर चढ़ बैठा।

अब वह हाथी आकाश में उड़ा। राजा पृथ्वी पर रहने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वालों के कौतुक देखता जाता था। थोड़ी देर में वह हाथी एक घने जङ्गल में उतरा, और अपनी सूंड से राजा को नीचे उतार कर आप तुरन्त ही अदृष्ट हो गया।

विस्मित राजा वन में इधर उधर घूमने लगा। तब राजा की दृष्टि धर्माचार्य गुरुओं पर पड़ी। राजा प्रसन्न हो कर नमस्कार करने के लिये उनकी शरण में गया। गुरुओं ने भी राजा को यथोचित धर्मोपदेश दिया।

हे राजन्! तू विषाद मत कर। धर्म की बातों में प्रमाद को छोड़, क्योंकि मनुष्य देह, आर्यदेश, सब इन्द्रियों में चतुराई और आयु, यह सत्कर्मों के प्रभाव से ही मिलती हैं। यह तो पुण्य से प्राप्त हो जांय परन्तु बोधि रत्न की प्राप्ति सुदुर्लभ है। सबसे बढ़ कर जो कल्पवृक्ष के समान धर्म की सेवा करता है वही इष्ट सुखों को प्राप्त करता है। धन सम्पत्ति जल तरंगों के समान नाशवती है। जवानी तीन चार दिन की पाहुनी है, आयु शरद ऋतु के मेघों की तरह चंचल है इस लिये धन को छोड़ धर्म की साधना करो।

इत्यादि गुरूपदेश को सुन कर राजा को ज्ञान हुआ। राजा ने तुरन्त ही जिन धर्म की शरण ली, और गुरु से पूछने लगा "महाराज! यह देव तथा हस्ती कौन था, जो मुझे यहां छोड़ कर चल दिया? इसी समय देव भी वहां आगया। गुरु ने कहा, यह तुम्हारा बान्धव है। यह पहिले गृहस्थ धर्म को आराधन करने से देवता होगया था। किन्तु अब तुम्हें राज्य लोलुप देखकर प्रतिबोध देने के लिये तेरे निकट पहुंचा और हस्ती रूप धर कर तुझे यहां तक लाया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा मन्मथ बहुत प्रसन्न हो कर बोला—मैं आज धन्य हूं जो मैंने आपके दर्शन किये तथा धर्म-लाभ रूपी आशीर्वाद पाया।

गुरु महाराज ने राजा को पूर्णतया जैन पथ दिखाया और कहा कि दत्त चित्त हो जैन धर्म को धारण करो जिस से तुम्हें मोक्ष सुख को प्राप्ति हो। इस पर राजा ने खिन्न चित्त हो कर कहा "महाराज, मेरे घर में कोई पुत्र नहीं इस लिये धर्माराधन में एकचित्तता नहीं होती। मेरे बहुत से पुत्र हुए भी परन्तु कर्म योग से सब मर गये। अतः मेरा चित्त हर समय दुःख में व्यस्त रहता है। शास्त्र कारों का कथन है.

"बालस्स माय मरणं भज्जा मरणं च जुव्वणा रंभे—
वुढस्स पुत्त मरणं तिन्निवि गुरु आई दुक्खाई"

अर्थात्—बालक को माता के मरने का, जवान मनुष्य को पत्नी और वृद्ध को पुत्र के मरने का बहुत ही दुःख होता है।

पुत्र के विना मेरा राज पाट सर्वथा व्यर्थ है"।

राजा मन्मथ के प्रलाप को सुन कर गुरु महाराज ने कहा "राजेन्द्र! शोच क्यों करते हो? धर्म के प्रभाव से तेरे पुत्र होंगे। राजा ने गुरु महाराज के बचनों से धर्य धारण किया और गुरुओं को नमस्कार करके उसी देवता के आधार से वह अपने नगर में पहुंचा। तथा उस देवता ने उसे लौटते समय सर्व-रोग हरण करने वाला स्वर्ण का प्याला दिया और कहा कि इसमें डाल कर पिये गये जल से सब रोग दूर हो जायेंगे"-ऐसे कह कर देवता लौट कर अपने स्थान को चला गया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स-कुशल आये हुये राजा को देख कर प्रजा बहुत प्रसन्न हुई तथा राजा ने उस देवता का और अपने जैन धर्म अंगीकार करने का सब हाल कह सुनाया। लोग बहुत प्रसन्न हुये और सब के सब जैन धर्म में स्थिर होगये। पति भक्ता पट रानी ने भी वैसा ही किया।

देव पूजा तथा पंच परमेष्ठि का ध्यान करते हुये राजा के दो पुत्र पैदा हुए। राजा ने सोने के उस प्याले में उन्हें पानी पिलाया। फिर बड़े उत्सव किये, बहुत से वस्त्र भूषण दान दिये और रूपसेन तथा रूपराज उनके नाम रक्खे। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह वे ज्यों २ बढ़ते गये. त्यों २ प्रजा उन्हें अधिक से अधिक प्रेम से देखने लगी.

"स एव रम्यः पुत्रो यः कुलमेव न केवलम्—
पितुः कीर्तिं च धर्मं च गुणांश्चापि विवर्धयेत्"

अर्थात्—संसार में वही पुत्र श्रेष्ठ होता है. जो केवल अपने कुल को ही नहीं. अपने पिता की कीर्ति और धर्म तथा गुणों की भी वृद्धि करता है। राजा ने उन्हें विद्या अध्ययन के लिये पण्डित के पास छोड़ा—क्यों कि जिस मनुष्य ने बचपन में विद्या अध्ययन नहीं किया, जवानी में धन नहीं कमाया, और बुढ़ापे में धर्म नहीं किया. वह आयु के चौथे भाग में क्या करेगा।

यद्यपि वे दोनों राज कुमार पूर्ण विद्वान हो गये, तथापि उन्हों ने विद्याभ्यास न छोड़ा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

युक्तमेव—

"संतोष स्त्रिपु कर्त्तव्यः स्वदारे भोजने धने—
त्रिषु चैव न कर्त्तव्यो दानेचाऽध्ययने तपे"

अर्थात्—मनुष्य को स्त्री में, भोजन में, और धन में संतोष करना चाहिये परन्तु दान-अध्ययन और तप इन तीनों में संतोष न करना चाहिये।

क्रम से वे दोनों राज कुमार जवान होकर, विनय, विवेक और चातुर्य आदि गुणों से युक्त सब जगह प्रसिद्ध हो गये। राजा भी उन्हें यौवन सम्पन्न देख कर उनके लिये अच्छे कुल की कन्यायें तलाश करने लगा।

इधर मालव देश की धारा नगरी में प्रतापसिंह राजा राज्य करता था,। उसके बहुत से पुत्रों के पीछे सर्व कला कुशला एक पुत्री हुई, उस कन्या को विवाह योग्य होते देख राजा उसके विवाह की चिन्ता करने लगा।

एक बार राजा प्रतापसिंह के पूछने पर उसके मन्त्री ने कहा, "महाराज? राजा मन्मथ के दो पुत्र सर्व-गुण सम्पन्न सुनने में आये हैं इसलिये आप अपनी पुत्री का सम्बन्ध उनमें से एक से करदें तो अच्छी बात है। राजा प्रतापसिंह तुरन्त ही इस नेक सलाह को मान गया; और मन्त्री को भेज कर उसने राजा मन्मथ से यह प्रस्ताव किया।

राजा मन्मथ को यह प्रस्ताव रुचिकर प्रतीत हुआ। उसने ज्योतिषियों को बुला कर विवाह के सम्बन्ध में पूछा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उन्होंने देख कर कहा—"इस कन्या से विवाह करने से चौथे फेरे में कुमार की मृत्यु हो जावेगी"

यह सुन कर राजा ने दुःखित होकर मन्त्री से सब वृत्तान्त कहा। वे बोले—सचिव ? अब यदि हम इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते तो हमारी मित्रता भंग होने की शंका है। प्रस्ताव स्वीकार करने पर पुत्र-मरण और कन्या वैधव्य की समस्या उपस्थित है। इस विषय में क्या करना चाहिये ?

"मन्त्री ने विचार कर उत्तर दिया—"महाराज ? यदि उचित प्रतीत हो तो कुमार रूप-राज से ही इस कन्या का विवाह कर दिया जावे"। राजा ने पुनः ज्योतिषियों से पूछा। उन्होंने उत्तर दिया—"राजन् ! रूप राज के साथ इसका विवाह योग्य बनता है"।

रूपराज के साथ निश्चित समय पर उस कन्या का विवाह होगया।

रूपसेन के अविवाहित रहने पर भी रूपराज का विवाह लोगों को अयुक्त प्रतीत होने लगा। नगर में प्रसिद्ध हो गया कि रूपसेन में अवश्य ही कोई अवगुण है। रूपसेन को भी अपनी निन्दा का पता लग गया। वह मन ही मन दुःखी हो अपने मित्र से कहने लगा, मित्रवर ? पिता ने मेरे लिये अच्छा न जान कर ही उस कन्या का विवाह मेरे साथ नहीं किया। परन्तु लोग इस बात को न जान कर व्यर्थ ही निन्दा करते हैं। अतः मेरा विचार है कि मैं इन भूले हुये नगर वासियों को शिक्षा दूं। मित्र ने उत्तर दिया-"तुम्हारा यह विचार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ठीक नहीं, तुम लोगों के मुंह को बन्द थोड़े ही कर सकते हो। नीच पुरुष दूसरों के दोषों का कथन किया ही करते हैं। इस पर आप को खेद न करना चाहिये। लोगों के निन्दा करने से आप का महत्व कम नहीं होता"।

मित्र से बिदा ले रूपसेन सोचने लगा, कि लोग मुझ पर हंसते हैं, मेरे दोषों को ही प्रकट करते हैं। मुझे अब यहां रहना योग्य नहीं। अपने मान की रक्षा के लिये मुझे विदेश चले जाना चाहिये, वहां मुझे मेरे पुण्यों के प्रताप से अवश्य सुख मिलेगा। यह निश्चय करके रात्रि में ही वह अपने नगर से चल खड़ा हुआ।

कुमार रूपसेन जब नगर के बड़े फाटक पर पहुंचा, तो द्वार पाल ने उसे रोका और कहा—अर्ध रात्रि में आप के बाहर जाने का क्या कारण है। मैं आप को राजा की आज्ञा विना बाहर न जाने दूंगा।

कुमार ने द्वारपाल के हाथ पर एक स्वर्ण मुद्रा रक्खी और द्वार से बाहर हुआ।

द्वार पार करते ही कुमार ने अपने घोड़े को पवन सदृश् दौड़ाया और तुरन्त ही एक घने जङ्गल में पहुंच गया। वहां उसने एक जैन मन्दिर देखा। उसकी परिक्रमा करके अन्दर प्रवेश किया। अन्दर जाकर उसने एक सर्व विघ्न हरने वाली तथा सर्व सुख देने वाली श्री पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ती देखी। प्रसन्न मन से प्रणाम करके चैत्य वन्दन किया। एवं अनेक प्रकार से श्री पार्श्वनाथ भगवान् की स्तुति करके

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वह वहां से आगे चला। बहुत आगे जाकर उसने घोड़े को थका जान वहीं जङ्गल में छोड़ दिया, और आप तुङ्ग पर्वत के निकटवर्ती सहकार वन में विश्राम करने लगा।

इधर राजा मन्मथ को पता लगा कि रूपसेन नगर में नहीं है। उसने दुःखित होकर उसे ढूंढने के लिये अपने सेवक भेजे, परन्तु कहीं भी उसकी सुध न मिली। निरांत सब सेवकों ने राजा के आगे निवेदन कर दिया। राजा ने दुःखित होकर ज्योतिषियों को बुलाया। ज्योतषियों ने अगले दिन उत्तर देने को कहा। अगले दिन आकर कहा कि "महाराज हम रूपसेन के बारे में कुछ नहीं कह सकते और नाहीं आप पूछें। सुन कर आप को कष्ट होगा"।

यह सुनते ही राजा मूर्छित हो गये, तथा थोड़ी देर के बाद सावधान होकर राजा ने जैनाचार्य को पूछा। जैना चार्य ने उत्तर दिया, "राजन्" मैंने पद्मावती देवी से पूछा। उसने उत्तर दिया है, कि कुमार रूपसेन परदेश गया हुआ है। वह बारह वर्ष के बाद धन सम्पत्ति स्त्री सहित अवश्य आवेगा इस में कुछ संशय नहीं। देवताओं का कहा हुआ अन्यथा नहीं हो सकता। यह सुनते ही राजा को बहुत दुःख हुआ, वह कुटुम्ब सहित नित्यही दुःखी रहने लगा। रूप सेन को वह क्षण भर भी नहीं भुला सकता था।

उधर रूपसेन थोड़ी देर विश्राम करके फिर आगे चल दिया। थोड़ी दूर जाकर उसकी दृष्टि एक वृद्ध पुरुष पर पड़ी, वह ग्राम ग्राम में भिक्षा के निमित फिरता था।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुमार ने वृद्ध को देख कर नमस्कार किया. वृद्ध ने आशीर्वाद देकर कहा "अहो! तू राजा मन्मथ का पुत्र रूपसेन है (क्यों कि इस ने कई वार रूपसेन को अपने पिता की सभा में बैठे देखा था)।

कुमार ने वृद्ध से पूछा, "हे देव ? तुम इस समय कहां जारहे हो"। उसने उत्तर दिया कि मैं राजा मन्मथ के दरबार में जारहा हूँ। रूपसेन ने कहा जल्दी जाइये। वृद्ध ने पूछा-कुमार! तुम इस समय कहां जा रहे हो?"

रूपसेन बोला—परदेश घूमने की इच्छा से जा रहा हूँ।

वृद्ध—इस में अवश्य ही कोई कारण है. जो तुम अकेले परदेश जा रहे हो।

रूपसेन—कारण तो कर्मों का है।

वृद्ध– तुम अवश्य ही क्रोधित होकर घर से निकले हो। तुम को अपने घर वापिस चलना चाहिये, बुद्धिमानों को क्रोध न करना चाहिये।

वृद्ध के अनुरोध पर भी कुमार ने पीछे लौटना न चाहा। वृद्ध ब्राह्मण ने कुमार को फिर कहा-कुमार ? विदेश में बहुत दुःख होते हैं-तू कुमार है अपने घर को वापिस चल। परन्तु कुमार पूरे रङ्ग में रङ्ग चुका था। उसने कहा :—

संसार में समर्थों के लिये कोई भार नहीं है, उद्यागियों के लिये कुछ दूर नहीं है, विद्वानों के लिये कोई विदेश नहीं, मीठा बोलने वालों के लिये कोई दूसरा नहीं, अर्थात् सब ही

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपने हैं। इस लिये हे द्विजवर! आप मुझे कनकपुर जाने का मार्ग बतावें।"

कनकपुर जाने की बात सुन कर ब्राह्मण ने चौंक कर कहा "सुकुमार रूपसेन! तुम कनकपुर जाने का नाम न लो! कनकपुर का रास्ता अत्यन्त भयंकर है"। कुमार ने कहा-क्यों? भय किस बात का है। वृद्ध ने कहा-मार्ग में एक बहुत पुराना वट का वृक्ष है, जिस की चार शाखायें चारों तरफ दूर २ तक फैली हुई हैं। तथा उन चारों शाखाओं पर विद्या-सिद्ध चार योगी रहते हैं। वे लोगों पर उपद्रव करते हैं। तुम्हें उन के सामने न जाना चाहिये। इस लिये मैं कहता हूँ कि तुम बच्चे हो, कनक-पुर मत जाओ। कुमार ने हंस कर कहा मैं वहां जाने में कोई भय नहीं मानता। क्योंकि मैं तो केवल पुण्य ही की शरण में हूँ। कर्म फल में ही मेरा दृढ़ विश्वास है।

विप्र ने कुमार को जब किसी तरह भी रोके रुकता न देखा, तो कहा-सावधान होकर जाना "शिवास्ते पन्थानः सन्तु:" कुमार ने ब्राह्मण को एक स्वर्ण मुद्रा दी और कहा, कि आप हमारे घर जाकर मेरा पता न देना। और आप गर्जता हुआ आगे बढ़ा। कनक-पुर जाने के लिये यद्यपि मार्ग कठिन था, तो भी कुमार अपने अभीष्ट देवता का स्मरण करता हुआ आगे जारहा था और कहता था:—

"नमस्कार समो मन्त्रः शत्रुञ्जयः समो गिरिः।
वीतराग समो देवो न भूतो न भविष्यति"।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अर्थात्--नमस्कार मन्त्र के बराबर कोई मंत्र नहीं शत्रुंजय के सदृश् कोई तीर्थ पर्वत नहीं तथा वीतराग भगवान् के समान कोई देवता न हुआ है और न होगा।

कुमार को मार्ग में अच्छे २ शकुन हुए। चलते २ कुमार बहुत दूर निकल गया और जब मध्यान्ह का समय हुआ, तो उस को तृषा ने व्याकुल कर दिया।

कुमार एक स्थानपर बैठ कर सोचने लगा कि विदेश में बहुत कष्ट है, मैंने अभी चार सौ कोस जाना है। परन्तु तृषा अभी से व्याकुल करने लगी है। नितान्त कुमार थक कर नीम के वृक्ष के नीचे बैठ गया। वृक्ष की छाया से कुमार का हृदय कुछ शान्त हुआ और उसने सोचा कि यहां बैठे रहने से मार्ग कम थोड़े ही होता है। इस लिये उठा और आगे को चल दिया। कुछ दूर जाने पर वह एक नदी के किनारे पहुंचा और उसने वस्त्र द्वारा छान कर जल पिया। नदी को पार करके कुमार थोड़ी दूर जाने पर उस वट वृक्ष के पास पहुंचा, और सावधान हो पंचपरमेष्ठि मन्त्र का जाप करते हुए आगे बढ़ने लगा। उन चारों योगियों ने वृक्ष पर बैठे २ दूर से कुमार को आते देख आपस में मन्त्रणा की। "यह जो आने वाला व्यक्ति है अवश्य कोई महापुरुष प्रतीत होता है। अतः इसे अवश्यही अपने वश में करना चाहिये"। वे चारों योगी कुमार की ओर चल दिये। जब कुमार ने इन योगियों को अपनी ओर आते देखा। उस ने तुरन्त ही जान लिया कि येह वे ही योगी होंगे। इतने पर भी वह तनक नहीं घबराया और सोचने लगा, कि यहां पर कोई चाल चलनी चाहिये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुमार के तरकश में पांच बाण थे, उसने तुरन्त ही तरकश से एक बाण लिया और योगियों के सामने तोड़ डाला।

जब कुमार ने बाण को तोड़ कर पृथ्वी पर डाल दिया, तब योगियों ने कुमार से पूछा कि तुमने बाण क्यों तोड़ दिया। कुमार ने उत्तर दिया, मैंने सुना था कि तुम पांच हो, इस लिये तुमारे वध के लिये मैंने पांच बाण रक्खे थे। अब तुम मेरे सामने चार आये हो। इस लिये मैंने पांचवां बाण व्यर्थ समझ कर तोड़ डाला है। इस वन में मैं तुम्हारी बहुत दिनों से खोज करता रहा। परन्तु अकस्मात् तुम आज स्वयं ही प्राप्त हो गये हो।

योगियों ने सोचा कि कुमार अवश्य ही कोई महान शक्ति है। इसे किसी तरह छल कपट से वश में कर जाल में फंसाना चाहिये। वे बोले :—

हे सत्पुरुष ? हम तो तुझे सुजन जान तेरे पास आये हैं और तू हमें बुरा समझता है। हम योगी हैं तथा संसार का त्याग कर निर्जन वन में रहते हैं। ऐसे कह सुन कर वे योगी रूपसेन कुमार को उस वट वृक्ष पर ले गये, और कुमार से वैराग्य भरी बातें करने लगे। कुमार ने उन से पूछा ? कि तुम्हें व्रत धारण किये कितने वर्ष हो चुके हैं। वे बोले हमें व्रत ग्रहण किये पांच सौ वर्ष हो चुके हैं। कुमार ने कहा, तब तो तुम्हारे दर्शनों से मेरा भी जन्म सफल हो गया है। ऐसे वचनों से कुमार भी उन्हें सन्तुष्ट करता रहा। इस पर उन्हों ने उस का विश्वास दिलाते हुये कहा, हे कुमार ? तू आज से हमारा धर्म भाई रहा हम तुझ से कोई छल न

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करेंगे और भी जो गुप्त बातें हैं सब तेरे आगे कहते हैं।

हम चारों ने इस वृक्ष पर रह कर छै वर्ष तक एक देवता का आराधन किया। वह देवता हम पर प्रसन्न हो गया और उसने हमें वरदान में चार वस्तुएं दीं। चारों चीज़ें कुमार के आगे रख वे कहने लगे–हमारा इन पर विवाद है, इस लिये हे कुमार तुम जैसे चाहो यह चारों चीजें हमें बांट दो।

प्रथम—एक दण्ड (डण्डा) है, जिसके मारने से मृत वस्तु पुनर्जीवित हो जाती है।

दूसरा—पात्र है जिसके द्वारा एक समय में एक लक्ष आदमियों को भोजन मिल सकता है।

तीसरे—पादुकायें हैं जिन पर सवार होने से आदमी जहां चाहे जा सकता है।

चौथे—गुदड़ी है जिसको फैलाने से पांच सौ स्वर्ण मुद्रा एक दम गिरती हैं।

कुमार रूपसेन ने चारों वस्तुओं के प्रभाव को भली भांति जान लिया, और योगियों से कहा! यदि तुम चरों ही मेरा कहा मानों–तो मैं चारों को ही बराबर २ बांट सकता हूं। किसी को भी न्यूनाधिक कहने का अवसर न मिलेगा। इस महान् कार्य में आप लोग मेरा चातुर्य देखें। योगी बोले हमें तुम्हारा किया स्वीकृत है।

यदि तुम्हें मेरी बात स्वीकार है तो तुम यहां से दूर जाकर मेरी तरफ पीठ करके बैठो। जिसकी तरफ मैं जो वस्तु फैंकूं

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यह उसे ही ग्रहण करे। जब मैं ताली मारूं तो तुम जान लेना कि हमारी वस्तुएं बंट गई हैं। इसमें तुम संशय न करो।

कुमार का कहा मान वे वहां से चलते हुए आपस में कहने लगे। अब रूपसेन हमारे वश में पूर्णतया आगया है। ऐसे कह वे चारों ही अलग २ स्थानों पर जाकर कुमार की ओर पीठ करके बैठ गये!

कुमार ने उनके जाने के पश्चात् ही पादुकाओं को अपने पाओं में धारण किया। गुदड़ी और पात्र अपनी पीठ पर बांधे, और दण्ड हाथ में लेकर तुरन्त ही कहा, पादुके! "मुझे शीघ्र ही कनकपुर पहुंचाओ"। इतना कहना था, कुमार आकाश में विमान वत् उड़ने लगा। आकाश मार्ग से जाते हुए कुमार ने योगियों से कहा–"दुष्टो योगियों के नाम पर कलंक का टीका लगाने वालो! तुम सब मिलकर मुझसे छल करना चाहते थे। परन्तु मेरी सत्यता से तुम्हीं ठगे गये"। इस पर योगियों ने बहुत पश्चात्ताप किया और कहने लगे।

अरे हम तो इसे ठगना चाहते थे, परन्तु इसने हम को ही ठग लिया, ऐसे प्रलाप करते हुए योगी दुःखित हो बन बन ग्राम २ में भिक्षाटन करने लगे। उन्हों ने वृक्ष का निवास छोड़ दिया।

इधर रूपसेन कुमार भी अपने पुण्योदय से कनकपुर के निकट एक बाटिका में उतरा और थोड़ी देर विश्राम करने के बाद बोला। पादुकाओं की परीक्षा तो हो चुकी, अब इस दण्ड की परीक्षा भी करनी चाहिये। यह सोच उसने चंपा के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूखे वृक्ष पर उस दण्ड को तीन बार मारा। बस दण्ड का तीसरी बार सूखे वृक्ष पर लगना था कि वह तुरन्त ही हरा भरा हो गया। तब कुमार ने समस्त वाटिका को हरा भरा कर दिया।

आस पास के जाने वालों ने यह दशा देखी, तो आपस में कहने लगे, कि रात २ में यह क्या चमत्कार हुआ जो सूखी हुई वाटिका हरी भरी हो गई। तुरन्त ही उसके मालिक से इसका भेद पूछा। माली ने पहिले तो इस बात को व्यर्थ समझा। निदान! जब शहर के सभी आदमी उसके पास आकर हर्ष सन्देश देने लगे तो उसने अपनी पत्नी को परीक्षा करने के लिये वाटिका में भेजा। मालिन ने वहां जाकर देखा तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। उस ने यह भी देखा कि एक सुकुमार एक वृक्ष के नीचे पड़ा सो रहा है। मालिन कुमार को देखते ही जान गई कि यह सब कृत्य इसी ही महानुभाव का है। इसने ही मेरी वाटिका को हरा भरा किया है। उसने वाटिका में से अच्छे २ फूल चुन कर एक सुन्दर हार बनाया। जब कुमार निद्रा से जागा, तो सन्मान् पूर्वक वह हार कुमार के गले में डालदिया। कुमार ने उस हार के उपलक्ष में मालिन को एक स्वर्ण-मुद्रा दे दी। सुवर्ण मुद्रा को पाकर मालिन बहुत प्रसन्न हुई और कुमार से कहने लगी "महाराज हमारे अहो! भाग्य हैं, जो आप यहां पधारे हैं। अब आप मुझ किंकरी के घर चलें।"

कुमार ने मालिन की बात सुनकर अपने मन में सोचा कि यह सब कुछ धन का कारण है, नहीं तो यह मुझे साथ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जाने को क्यों कहती"। अस्तु मालिन के बहुत आग्रह पर रूपसेन मालिन के साथ होलिया।

मालिन ने कुमार को लेजाकर अपने घर के द्वार पर बिठा दिया और आप अन्दर अपने पति से कुमार के अन्दर आने की आज्ञा लेने गई। मालिक अन्दर कुढ़ा बैठा था, उसने तुरन्त ही ताड़ना देते हुए अपनी पत्नी से कहा-दुष्टे? तू अच्छा बुरा कुछ नहीं देखती, जो आया झट घर में ले घुसी। इस पर मालिन ने विनय पूर्वक कहा "स्वामिन्! आप क्रोध क्यों करते हो? यह हमारे अतिथि हैं। इन की कृपा से ही हमारा बाग हरा भरा हुआ है"।

दीनार दिखा कर कहा "यह इस कुमार ने दी है"। दीनार को देखते ही माली के मुंह में पानी भर आया और अपनी स्त्री से बोला तू शीघ्र ही उसे (कुमारको) अपने घर में आश्रय दे। माली भी कुमार को अन्दर ले आया और बोला:—

एह्यागच्छ समाविशासनमिदं प्रीतोऽस्मिते दर्शनात्
का वार्ता अति दुर्बलोऽसि च कथं कस्माच्चिरं दृश्यते।
इत्येवं गृहमागतं प्रणयिनं ये प्रश्रयन्त्यादरा:—
त्तेषां युक्त मशंकितेन मनसा गन्तुंगृहे सर्वदा।"

अर्थात्—आओ, यहां बैठो, मैं आप के दर्शनों से प्रसन्न हूँ; क्या बात है? देरसे देखे गये हो और कुछ दुर्बल प्रतीत होते हो—इस तरह के वचन जो आदमी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आदर से पूछते हैं, उनके घर निःशंक भाव से जाने में भी कोई आपत्ति नहीं।

अच्छे आदमियों का परदेश में मान ही होता है। कुमार ने भी उस घर में प्रवेश कर अपनी चारों वस्तुओं को बान्ध कर एक कोने में रख दिया और आप नित्य ही नगर में जाता, तथा नगर का कुतुहल देखता। संध्या होते ही, मालिन के घर आजाता।

जब कुमार को वहां रहते बहुत दिन हो गये तब एक दिन मालिन ने कुमार की उस गांठ को उठा कर खोला। वस्तुएं देखते ही सोचने लगी, यह वस्तुएं तो योगियों के पास होती हैं। यह (कुमार) अवश्यही कोई ठग या चोर है। इसने ठगने के लिये ही मुझे, सोना दिया था। यदि यह मुझे छल कर मेरे बालकों को कहीं ले जायेगा तो मैं क्या करूंगी। इसे किसी तरह अपने घर से निकाल देना चाहिये। मालिन ने तुरन्त ही रूपसेन का सब सामान अपने घर के पछवाड़े डाल दिया। जब कुमार सन्ध्या समय बाहर से घूम कर आया, तो मालिन उसके साथ कलह करने लगी। "कुमार ने कहा-बहिन? तू मेरे साथ कलह क्यों करती है। क्या आज तेरे मन में किसी ने भ्रम डाल दिया है, जिससे तू मेरे साथ लड़ती झगड़ती है"। मालिन ने कहा तू धूर्त्त है। मैं आज तक तेरे भेद को न पा सकी। "तुझ जैसे धूर्त्तों के साथ जो भी वर्त्ताव करते हैं, वे अत्यन्त मूर्ख हैं"। "तूने मुझे धूर्त्त क्यों जाना"—कुमार ने आग्रह पूर्वक मालिन से पूछा। इस पर मालिन ने कड़क कर जवाब दिया। सुन!

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

"मुखं पद्मदलाकारं वांचश्चन्दन शीतला-
हृदयं कर्त्तरी तुल्यं त्रिविधं धूर्त्त लक्षणम् ।"

अर्थात्—संसार में जिस पुरुष का मुख पद्मपत्र के समान
और वाचा चन्दन वत् शीतल हो, मन कैंची के
समान हो, ऐसे तीन लक्षणों वाले धूर्त्त होते हैं।

कुमार बोला, "मैंने तेरे साथ क्या ठगी की" इस पर मालिन ने कड़क कर कहा! "तू धूर्त्त है, मैंने आज तेरी गठड़ी को खोल कर देखा था। उससे प्रतीत होता है कि तू अवश्य ही धूर्त्त है, इसलिये अब तू मेरे घर में नहीं रह सकता। अपने रहने के लिये कोई और स्थान देख? आज से पीछे तू मेरे घर कभी न आना"। कुमार ने कहा-बहिन? "प्रतीत होता है कि तुझे किसी ने बहका दिया है। अस्तु यदि तू मुझे धूर्त ही मानती है तो कृपया मेरी वस्तुएं मुझे देदे। जिससे मैं अन्य स्थान पर चला जाऊं"।

कुमार की बात सुन कर मालिन ने उत्तर दिया- "कि मैं ने तेरी सब वस्तुएं घर के पीछे डाल दी हैं, वहां से लाकर देती हूँ"। मालिन गई और घर के पछवाड़े से चारों वस्तुयें लाकर कुमार को देदीं। अपनी चारों वस्तुओं को पाकर कुमार ने मालिन से कहा- "देख मैं इन वस्तुओं का महत्व तुझे दिखाता हूँ"। ऐसे कह कर कुमार ने उस गुदड़ी को फैला दिया। गुदड़ी का फैलना था कि उसमें से तुरन्त ही पांच सौ सुवर्ण मुद्रा पृथ्वी पर गिरीं। कुमार ने सब मुद्रा मालिन को दे कर कहा कि मैं तेरे मकान में ठहरा हूँ, तू ने इन को किराये में समझना।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जब मालिन ने अपने आगे पांच सौ अशर्फियों का ढेर देखा तो अपने किये पर पछताने लगी और कुमार के आगे हाथ जोड़ कर बोली, महाराज मैं भूल गई। आप मेरे अपराध को क्षमा करें और आप अवश्य ही मेरे घर में रहिये। मैं आज से पीछे कभी आप का अपमान न करूंगी"। इस पर कुमार ने सोचा, "यह सब धन का प्रभाव है"। कुमार रूपसेन चलने को तैयार हुए। परन्तु मालिन ने कुमार का सब सामान छीन कर अपने घर में डाल लिया और आप कुमार के पांओं पर गिर पड़ी और बोली—"कुमार! आज से तू मेरा बन्धु है। इसके भगवान् साक्षी हैं"। कुमार फिर उसके घर में सुख से रहने लगा और एक दिन अपनी मूर्खता से उसने उन तीनों वस्तुओं का प्रभाव भी मालिन के आगे प्रकट कर दिया।

एक दिन कुमार और मालिन अपनी छत पर बैठ कर कनकपुर की रचना देख रहे थे। कुमार ने अपने निकट हा सात मंज़िलों वाला एक महल देखा। रूपसेन ने मालिन से पूछा। मालिन ने कहा यह कनकपुर के राजा का महल है। इस नगर में कनक भ्रम नाम वाला राजा राज्य करता है। उसकी पट रानी का नाम कनक माला, तथा पुत्री का नाम कनकवती है। वह लड़की विद्या आदि गुणों से अलंकृत साक्षात् सरस्वती की तरह है। सकल गुण युक्त तथा ६४ कलाओं में निपुण है।

इसी महल में कनकवती रहती है। इस महल के तीन सौ साठ ३६० द्वार और चौरासी ८४ खिड़कियें हैं। कुमारी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कनकवती नित्य ही एक द्वार खोलती है और नगर की रचना देखती है। राजा की आज्ञा के विना वह कहीं बाहर नहीं जासकती। तथा मैं नित्य ही कुमारी के पास पुष्प लेकर जाती हूँ"। कुमार ने कुतुहल से पूछा, "वहिन! यह हमारे सामने वाला द्वार किस दिन खुलेगा"। मालिन ने उत्तर दिया "यह मैं नहीं जानती"। जब कुमार और मालिन छत पर बैठे बातें कर रहे थे, उसी समय कुमार के सन्मुख वाला द्वार ही लड़की ने खोला। कुमार प्रसन्न मन उधर देखने लगा और अपने भाग्य को सराहता हुआ बोला, "हे जीव! यदि संसार में मनों वांच्छित फल पाना है तो पुण्य कर्म कर, क्यों कि पुण्य कर्म के विना रम्य वस्तुओं के पाने का उद्योग करना व्यर्थ है"।

कुमारी की दृष्ठि भी रूपसेन कुमार पर पड़ी। दोनों की दृष्ठि आपस में मिल गई; परस्पर स्नेह भी उत्पन्न होगया।

कनकवती ने सोचा—"पिता जी मेरे लिये सदा ही वर अन्वेषण करते रहते हैं। यदि मेरे पिता इस कुमार के साथ मेरा विवाह करदें तो कैसी अच्छी बात है"। तथा उसने उसी क्षण प्रतिज्ञा भी की, "या तो मेरा पाणि-ग्रहण कुमार से होगा नहीं तो इस जीने से मरना ही भला है"। प्राक् पुण्य के प्रभाव से कुमार रूपसेन के मन में भी वैसी ही अभिलाषा हुई। दोनों के दूर होने पर भी परस्पर स्नेह का संचार हो ही गया। तथा दोनों के मन में मिलने की इच्छा बलवती हुई। वह उस खुले द्वार में बैठी कुमार का ही आराधन करती रही।

इधर कुमार ने भी जैसे तैसे उस दिन को व्यतीत किया

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

और रात्रि में सु-सज्जित हो कर पादुकाओं को पहन कर वह तुरन्त ही कुमारी कनक वती के मन्दिर में पहुंचा। कुमार को अपनेघर आया देख कुमारी के हर्ष का पारावार न रहा, वह कुमार का शिष्टाचार करने के लिये उठी।

कुमार के दर्शन मात्र से कुमारी का मन प्रफुल्लित हो गया। उसने कुमार की कुशलता पूछ उन्हें अच्छे स्थान पर बिठाया और कहने लगी—"स्वामिन्! आप यहां तक कैसे आये? मेरे पिता ने मेरी रक्षा के लिये महल के चारों ओर ७ सात सौ पहरे दार छोड़ रक्खे हैं सो द्वार-मार्ग से आना तो कठिन ही है"। कुमार बोला—"मैं विद्या बल से चाहूँ जहां जासकता हूँ"। (यदि यह मेरा स्वामी हो जावे तो अहो भाग्य!) ऐसा विचार कर कुमारी रूपसेन से कहने लगी;—

"हे सत्पुरुष क्या आप मेरे साथ विवाह करके मुझे कृतार्थ करेंगे"!

कुमार बोला, मैं विदेशी हूं, तू राज कन्या है, मेरा तेरा सम्बन्ध कैसे हो सकता है?

यतः

"ययोरेव समं वित्तं ययोरेव समं कुलम्।
तयोर्मैत्री विवाहश्च नतुपुष्ट विपुष्टयोः"

अर्थात्—मैत्री और विवाह उनका ही परस्पर हो सकता है जो दोनों ही धन तथा कुल में बराबर हों।

छोटों के साथ बड़ों का निभाव होना कठिन ही है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुमारी ने खेद प्रकट करते हुए कहा "स्वामिन्! आप के बिना मेरा निर्वाह कठिन है"।

जब कुमार ने पूरी तरह जान लिया कि इस का निश्चय ठीक है, तो कुमार ने कनकवती की विनय को स्वीकार कर लिया। तुरन्त ही चार कलश रख वेदी तैयार की तथा दीपक को साक्षी करके दोनों ने परस्पर पाणि ग्रहण कर लिया तत्पश्चात् कुमार मालिन के घर आकर सो गया।

कुमार रूपसेन नित्य ही गुप्त रीति से कनकवती के पास जाता रहा। कनकवती के महल में रहने वाली दासियों को कुमारी को पवित्रता पर संदेह हुआ। उन्हों ने रानी से और उसने राजा के आगे निवेदन कर दिया।

राजा ने क्रुद्ध हो तुरन्त ही सब पहरे दारों को अपने पास बुलाया और पृथक् २ सबको ताड़ फाड़ कर पूछना आरम्भ किया। उन्होंने निवेदन किया कि हमने "किसी को आते जाते नहीं देखा"

राजा ने क्रोध के आवेश में आज्ञा दी कि इन ७ सात सौ पहिरे दारों को बांध कर तब तक भौरे में डालदो जब तक यह चोर का पता न बतावें। दूतों ने भी बहुत छान बीन की परन्तु कोई पता न चला और नाहीं चलना था। निदान राजा ने सात सौ पहरे दारों को ही चौराहे पर प्राण-दण्ड की आज्ञा देदी।

आज्ञा की देर थी; नगर भर में दुहाई मच गई। लोग कहने लगे कि क्या कोई नगर में ऐसा पुरुष नहीं, जो इन सात सौ निरपराधियों की जान बचावे"!

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उस नगर में वेश्याओं के सात सौ घर थे। सब वेश्याओं ने राजा की सेवा में उपस्थित हो निवेदन किया—"राजन्! आप इन निरपराधियों को छोड़ दीजिये और यह महान् कार्य्य हमारे सुपुर्द करें। हम अपराधी को पकड़ कर अवश्य ही आपकी सेवा में उपस्थित करेंगी। यदि अन्यथा हुआ तो आप हमें एक मास के बाद शूली पर चढ़ा सकते हैं"। राजा ने इस बात को स्वीकार कर उन सात सौ जवानों को छोड़ दिया। नगर में उनकी बहुत प्रशंसा होने लगी।

वेश्यायें उसी दिन से अपराधी को ढूंडने लगीं। पर उस का कहीं पता न चला। नितान्त एक वृद्ध वेश्या ने अपनी चतुराई से कन्या के सोने वाले कमरे में सब जगह सिन्दूर डाल दिया, तथा पहिरे दारों को भी चौकन्न कर दिया।

रूपसेन नित्य ही आता जाता था। वैसे ही आज भी रात्री में आया। कुमारी कनक वती ने सिन्दूर तथा वेश्याओं की बात कह सुनाई। रूपसेन ने कुमारी को तसल्ली दी; पुनः मालिन के घर आकर कपड़े बदल डाले। प्रातः ही चौराहे पर घूमने लगा। इधर वेश्यायें भी लिप्त पदोंवाले मनुष्य का अन्वेषण कर रहीं थीं। रूपसेन भी कुतुहल देखने के लिये उन वेश्याओं के साथ हो लिया। वेश्याओं ने सब घर खोज डाले परन्तु चोर का कहीं पता न लगा। निदान इसी दौड़ धूप में २९ दिन व्यतीत हो गये। वेश्याओं को अपनी जान की फिकर हुई तथा सब ही अपनी प्रतिज्ञा पर पछताने लगीं और कहने लगीं कि हम तो केवल अपनी कीर्ति के लिये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आ श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर W 8801
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

सात सौ जवानों की जान बचाना चाहती थीं परन्तु यह नाग-हानी आफ़त हम पर ही टूट पड़ी। अब हम इस क्रूर दुःख से किस तरह छूट सकती हैं ?

जब तीस दिन पूरे हो चुके तो राजा के क्रोध का पारावार न रहा क्योंकि सात सौ वेश्यायें भी चोर व्यक्ति का पता न लगा सकीं। तुरन्त ही उन के लये शूली की आज्ञा देदी गई। दूतों को कह दिया गया कि "इन का घर दर सब हमारे खज़ाने में भेज दो तथा इस विषय में दोबारा पूछने की कोई आवश्यकता नहीं"।

राजा के इस आदेश को सुन कर सभा में उपस्थित सभी सज्जन चिन्ता करने लगे।

समस्त नगर में प्रसिद्ध हो गया. कि पाप तो किसी ने किया होगा, परन्तु अनर्थ सात सौ वेश्याओं का होने को है। मन्त्रियों ने भी राजा से बहुत कुछ कहा सुना कि आप स्त्रियों को प्राण दण्ड न दें यह शास्त्र से विपरीत है।

राजा ने कुपित होकर कहा—"सचिवगण ! इस विषय में हम से कुछ मत कहो"। मन्त्रियों का अपमान करके राजा ने अपनी आज्ञा को वापिस न लिया।

उधर चौराहे पर उन सात सौ वेश्याओं को ले जाया गया। लोग वहां से दूर भाग रहे थे और कहते जाते थे कि अपराधियों के पास खड़े होना युक्त नहीं।

रूपसेन कुमार भी घूमता फिरता वहां आया और यह कुतुहल देख लोगों के हाहाकार को सुन कर तथा चौदह सौ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जीवों के वध को जान कर, उसके मन में दया का संचार हुआ। वह सोचने लगा कि मेरे कारण ही इन सब को दुःख हो रहा है। क्यों न मैं अपने प्राणों से इनकी रक्षा करूं। मैं ने क्या इस संसार में सदा रहना है ?

"हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे फ़ानी में-
कुछ अच्छे काम करलो चार दिन की ज़िन्दगानी में।
बहा ले जायगा इक दिन यह दरयाए फना सबको-
रुकावट आ नहीं सकती कभी इसकी रवानी में।
क़याम इस जा नहीं सब कूच कर जायेंगे दुनियां से-
कोई बचपन कोई पीरी कोई अहदे जवानी में !

क्षण भर सोच कर रूपसेन भागा हुआ मालिन के घर गया और उन सिंदूर भरे वस्त्रों को धारण कर शीघ्र ही चौराहे पर पहुंचा। वहां से प्रतिहारी द्वारा राजा के पास खबर पहुंचाई "कि आपके दर्शन करने को कोई विदेशी आया है"। राजा की आज्ञा से रूपसेन तुरन्त राज सभा में लाया गया। कुमार सभा में आकर दिये हुए स्थान पर बैठ गया।

राजा ने तेजस्वी कुमार के मुंह को एक टक देखा। कुमार का मुख तपे हुए कुन्दन की तरह चमक रहा था। राजा ने सोचा कि यह अवश्यही कोई विद्याधर, देव कुमार, सूर्यपुत्र, या चन्द्र पुत्र है।

वहां बैठी हुई उस वृद्ध वेश्या ने कुमार रूपसेन के सिंदूर भरे कपड़ों को देखकर राजा के कान में निवेदन किया, महाराज ! "यही तो वह अपराधी है" राजा ने कहा-"तू

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.	Jun Gun Aaradhak Trust

किस तरह जानती है" वेश्याने तुरन्त ही रूपसेन के कपड़ों पर सिन्दूर के निशान दिखाये। राजा ने विस्मित होकर कुमार से पूछा "क्या वेश्या जो कुछ कहती है सत्य है" वह बोला हां "राजन्! सब सत्य है आप इन सब को छोड़कर मुझ अकेले को ही फांसी की आज्ञा दें। क्यों कि मैं ही अपराधी हूँ"।

सभा के लोग कुमार के साहस को देख कर दंग रह गये और परस्पर कहने लगे कि यह महानुभाव कहां से आया है, यह बड़ा साहसी है! मरने के समय भी इस के मुख पर चिन्ता का नाम तक नहीं।

राजा ने कहा-"सभा में यह निर्लज्ज होकर मेरे सामने बोलता है, अतः अवश्य ही चोर है। दूतों को तुरन्त ही आज्ञा दी कि इस रूपसेन को चौराहे पर ले जाओ और फांसी दे दो। तथा शेष सब को छोड़ दो।

आज्ञा की देर थी-कुमार को तुरन्त ही चौराहे पर लेगये। सात सौ वेश्याओं तथा सात सौ पहरे दारों को छोड़ दिया गया तथा कुमार को समस्त नगर में घुमाकर फांसी दे दी गई।

कुमार को शूली होने के उपरांत मालिन को भी पता लगा। वह बहुत शोक प्रकट करने लगी, "कि राजा ने बड़ा पाप किया; जो एक विदेशी को शूली चढ़ा दिया"। इस तरह कुमार के गुणों को स्मरण करती हुई वह बहुत रोई धोई। रोने धोने में ही मालिन ने तमाम दिन व्यतीत किया।

रात्रो में मालिन अपने पति से कहने लगी। पतिदेव ? उस विदेशी ने हमपर बहुत से उपकार किये हैं। इस समय

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वह मर गया है परन्तु उसका दण्ड हमारे घर में विद्यमान है, आप उस दण्ड को लेकर वहां जाओ और तीन बार उस मृतक शरीर पर दण्ड लगाओ; वह कुमार अवश्य ही जीवित हो जावेगा। इस में कोई सन्देह नहीं, केवल साहस की आवश्यकता है, आप इतना प्रत्युपकार करें।

माली ने इस बड़े भाषण को सुनकर उत्तर दिया, "प्रिये! तुम सत्य कहती हो, परन्तु वहां जाना बड़ी विपत्ति का कारण है। यदि मैं वहां जाऊं और मुझ को कोई देखले तो मुझ पर विपत्ति अवश्य ही टूट पड़े। पति का टका सा जवाब सुन कर मालिन स्वयं वहां गई। उसने वहां जाकर देखा कि रूपसेन के गले में फांसी पड़ी है तथा कुमार रूपसेन बुलाने पर भी नहीं बोलता। मालिन ने तुरन्त ही मृतक शरीर पर तीन बार दण्ड लगाया। दण्ड का लगना था कि कुमार तत्क्षण "जय जिनेन्द्रदेव" कह कर उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा कि आज तो बहुत निन्द्रा आई। मालिन ने कुमार को सब बात कह सुनाई। कुमार ने भी स्मरणकर मालिन के गुणों का गान किया। वह बोला-"बहिन? मैं तेरा यह उपकार कभी न भूलूंगा, तूने आज मुझे जीवन दान दिया है"। मालिन कुमार को लेकर अपने घर चली गई।

माली ने जीवित कुमार को देखकर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया। कुमार से कहने लगा। "कुमार? तेरे भाग्य अच्छे ही थे जो दुःख से छूट गया। कुमार ने कहा यह सब तुम्हारी ही कृपा का फल है। तुम्हारे ही प्रत्युपकार से मेरी जान बची है तथा तुम्हें धन्य हो कि जिन्हों ने मेरी जान बचाई। तुम पति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पत्नी दोनों ही साधु हो ! तुमने प्रत्युपकार कर के पृथ्वी को अलंकृत कर दिया है। माली ने उत्तर दिया--कुमार ? यह सब तेरे ही पुण्य का फल है। ऐसी बातें करते २ उन्हों ने उस रात्री को व्यतीत कर दिया।

प्रातः काल ही कुमार रूपसेन ने मालिन से कहा-बहिन ? आज तू पुष्प लेकर कुमारी के पास शीघ्र जा और कुमारी के हर्ष-शोक की परीक्षा कर। यदि वह मेरे विरह में लवलीन हो तब तूने मेरे जीवित रहने की बात से उसे हर्षित कर कहना कि आज सन्ध्या को कुमार रूपसेन तेरे महल में अवश्य आवेगा। यदि इस तरह कहने पर भी उसका शोक दूर न हो तो पूरा आश्वासन देना। यदि उसने कोई शोकावस्था प्रकट न की तो आज से पीछे मैं कभी उसके घर नहीं जाऊंगा।

कुमार के कहने से मालिन फूल लेकर तुरन्त ही कुमारी कनकवती के महल में गई।

कुमारी ने मालिन को देख कर दीर्घनिःश्वास लिया और बोली, "यह हार अब मेरे श्रंगार के योग्य नहीं रहा। क्यों कि जिसके लिये मैं सब श्रंगार किया करती थी, वह ही नहीं रहा। आज मैं अत्यन्त दुखी हूँ ! अपना दुःख किस के आगे प्रकट करूं। केवल तेरा ही सहारा जान तेरे आगे निवेदन करती हूँ। बता अब मैं इस समय किस की शरण लूं। बस आज से मैं इस संसार में जीवित न रहूँगी और रहना भी किसके लिये है ?

कुमारी कनकवती के विलाप को सुन कर मालिन बोली:—

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वह मर गया है परन्तु उसका दण्ड हमारे घर में विद्यमान है, आप उस दण्ड को लेकर वहां जाओ और तीन बार उस मृतक शरीर पर दण्ड लगाओ; वह कुमार अवश्य ही जीवित हो जावेगा। इस में कोई सन्देह नहीं, केवल साहस की आवश्यकता है, आप इतना प्रत्युपकार करें।

माली ने इस बड़े भाषण को सुनकर उत्तर दिया, "प्रिये! तुम सत्य कहती हो, परन्तु वहां जाना बड़ी विपत्ति का कारण है। यदि मैं वहां जाऊं और मुझ को कोई देखले तो मुझ पर विपत्ति अवश्य ही टूट पड़े। पति का टका सा जवाब सुन कर मालिन स्वयं वहां गई। उसने वहां जाकर देखा कि रूपसेन के गले में फांसी पड़ी है तथा कुमार रूपसेन बुलाने पर भी नहीं बोलता। मालिन ने तुरन्त ही मृतक शरीर पर तीन वार दण्ड लगाया। दण्ड का लगना था कि कुमार तत्क्षण "जय जिनेन्द्रदेव" कह कर उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा कि आज तो बहुत निन्द्रा आई। मालिन ने कुमार को सब बात कह सुनाई। कुमार ने भी स्मरणकर मालिन के गुणों का गान किया। वह बोला-"बहिन? मैं तेरा यह उपकार कभी न भूलूंगा, तूने आज मुझे जीवन दान दिया है"। मालिन कुमार को लेकर अपने घर चली गई।

माली ने जीवित कुमार को देखकर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया। कुमार से कहने लगा। "कुमार? तेरे भाग्य अच्छे ही थे जो दुःख से छूट गया। कुमार ने कहा यह सब तुम्हारी ही कृपा का फल है। तुम्हारे ही प्रत्युपकार से मेरी जान बची है तथा तुम्हें धन्य हो कि जिन्हों ने मेरी जान बचाई। तुम पति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पत्नी दोनों हो साधु हो ! तुमने प्रत्युपकार कर के पृथ्वी को अलंकृत कर दिया है। माली ने उत्तर दिया--कुमार ? यह सब तेरे ही पुण्य का फल है। ऐसी बातें करते २ उन्हों ने उस रात्री को व्यतीत कर दिया।

प्रातः काल ही कुमार रूपसेन ने मालिन से कहा—बहिन ? आज तू पुष्प लेकर कुमारी के पास शीघ्र जा और कुमारी के हर्ष-शोक की परीक्षा कर। यदि वह मेरे विरह में लवलीन हो तब तूने मेरे जीवित रहने की बात से उसे हर्षित कर कहना कि आज सन्ध्या को कुमार रूपसेन तेरे महल में अवश्य आवेगा। यदि इस तरह कहने पर भी उसका शोक दूर न हो तो पूरा आश्वासन देना। यदि उसने कोई शोकावस्था प्रकट न की तो आज से पीछे मैं कभी उसके घर नहीं आऊंगा।

कुमार के कहने से मालिन फूल लेकर तुरन्त हो कुमारी कनकवती के महल में गई।

कुमारी ने मालिन को देख कर दीर्घनिःश्वास लिया और बोली, "यह हार अब मेरे श्रृंगार के योग्य नहीं रहा। क्यों कि जिसके लिये मैं सब श्रृंगार किया करती थी, वह ही नहीं रहा। आज मैं अत्यन्त दुखी हूँ ! अपना दुःख किस के आगे प्रकट करूं। केवल तेरा ही सहारा जान तेरे आगे निवेदन करती हूँ। बता अब मैं इस समय किस की शरण लूं। बस आज से मैं इस संसार में जीवित न रहूँगी और रहना भी किसके लिये है ?

कुमारी कनकवती के विलाप को सुन कर मालिन बोली:—

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हे सखी ? यदि तू मेरा कहा माने तो मैं तुझ से एक बात कहती हूं। तू मरती क्यों है ? आदमी जीवित रह कर अनेक मङ्गलों को देखता है"। परन्तु कुमारी का निश्चय देख कर वह फिर बोली—"तेरा पतिजीवित है इस लिये कुमारी ? तू शोक को त्याग दे"। मालिन की इस बात से कुमारी हर्षित हो कहने लगी—"हे सखी ! मेरा पति यदि जीवित है तो मैं ईश्वर से यह वरदान मांगती हूं कि संसार में कोई न मरे। मालिन ने शपथ पूर्वक कहा कि यदि आज रात को कुमार तेरे पास न आया तो तू मृत्युका आराधन कर सकती है।

मालिन कुमारी को हार देकर अपने घर आई और उसने कुमार से वहां की सब बात कह सुनाई। कुमार के हर्ष का पारावार न रहा उसने उस दिन को एक वर्ष ख्याल करके व्यतीत किया तथा रात्री होते ही कुमार कुमारी के महल में पहुंच गया।

जिस तरह मेघों को देख कर मयूरी हर्षित होती है। उसी तरह आज कनकवती कुमारी—कुमार रूपसेन को अपने सन्मुख पाकर हर्षित हुई।

"हमें इस समय यहां न रहना चाहिये" ऐसे कह कर कुमार रूपसेन कुमारी को साथ लेकर तथा मालिन के घर से अपनी वस्तुएं ले, मालिन को बिना कहे ही कनकपुर से रवाना हुआ, तथा पादुका-प्रयोग से उसी बट वृक्ष पर विश्राम करने के लिये ठहरा। कुमारी तो सो गई परन्तु कुमार जागता रहा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिस समय कुमार और कुमारी कनकवती उस वृक्ष की एक शाखा पर विश्राम कर रहे थे उसी समय वहां एक योगी और एक योगिनी विश्राम करने आये। विश्राम लेने को दोनों ही एक शाखा पर चढ़ गये। थोड़ी देर के बाद वह योगी अत्यन्त-वेग से रोने लगा। योगिनी के रोकने पर भी वह न रुका और बोला, प्रिये ? जिस कारण से मैं रोता हूँ वह तू सुन।

हम चार योगियों ने इस वृक्ष पर रहकर चार सौ वर्षों में एक देवता को प्रसन्न करके गुथली पादुके दण्ड और पात्र-यह चार वस्तुएं प्राप्त की थीं।

एक दम यहां एक धूर्त्त आया और चारों वस्तुएं हम से ठग कर चल दिया। वे वस्तुएं मेरे स्मरण आगई थीं जिस से मैं रोने लगा। प्रिये! मैं तुझे भी बोधित करता हूँ कि संसार में कभी किसी का विश्वास नहीं करना। मेरा सर्वस्व नष्ट हो गया बस मैं इसी लिये रोता हूँ। योगिनी ने योगी को तसल्ली दी और कहाः—

"भवितव्यं भवत्येव कर्मणा मीदृशी गतिः
विपत्तौ किं विषादेन सम्पत्तौ हर्षेण किम्"

अर्थात्—संसार में जो होना होता है वह हो कर ही रहता है। इस लिये विपत्ति में रोने से और सम्पत्ति में हंसने से कुछ नहीं होता क्यों कि यह कर्मों की ही गति है।

"उन वस्तुओं से किसी न किसी का तो उपकार होता

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ही होगा, तुम इस विषय में कोई चिन्ता न करो," ऐसा कह कर योगिनी ने पुनः योगी से पूछा—स्वामिन् ! जब आप यहां चार सौ वर्ष तक रहे तो क्या आपने यहां से कोई आश्चर्य जनक जड़ी बूटी नहीं प्राप्त की। योगी ने "हां" कहते हुए यों कहा—

इस देश में ऐसा वृक्ष है जिस की जड़ मनुष्य को सुंघाने से मनुष्य कपि (बन्दर) बन जाता है। तथा दूसरी एक ऐसी जड़ी है। जिसे सूंघने से बन्दर भी मनुष्य हो जाता है।

इसके बाद उसी समय योगी और योगिनी दोनों प्रकार की जड़ियों को उखाड़ कर वहां से चल दिये।

जागते हुए कुमार ने योगी की सब बातें सुनी और वह जड़ी भी देखी। विस्मित कुमार ने भी वे दोनों जड़ियें ग्रहण करलीं। कनकवती के जागने पर कुमार सो गया। तब कुमारी कनकवती कुमार को पोटलो खोज कर देखने लगो। पोटला में पात्र गुथली आदि के सिवाये और कुछ नहीं था। इन वस्तुओं को देख कर कुमारी के भाव बदल गये। जिस कुमार को वह अपना प्राण वल्लभ कहा करती थी उसे ही आज धूर्त जानने लगी, और बोली—इस ने योगियों का भेस बनाकर व्यर्थ ही मुझे धोखा दिया। वास्तव यह कोई धूर्त योगी है। इसने अपनी चतुराई से मुझे जाल में फंसा रक्खा है। कर्मों की विचित्र-गति है जो मेरा इस धूर्त योगी से सम्बन्ध हुआ। कुमारी इस तरह विलाप करने और कहने लगी—हे दैवी ! तूने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अघटित घड़ दिया जो मेरा इस नीच के साथ सम्बन्ध कर दिया। इस लिये यही अच्छा हो जो मैं फिर अपने घर को वापिस चली जाऊं।

कुमारी यह विचार कर कुमार रूपसेन की कंथा आदि चारों वस्तुओं को उठा, पादुका प्रयोग से शीघ्रही अपने घर आकर अपने कमरे में सो रही। किसी ने भी उसे आते जाते नहीं देखा।

हत भाग्या कुमारी कनकवती चिन्ता मणि रत्न को छोड़ तथा दृढ़ प्रेम को न जान, मूर्खता में फंस कर कुमार का साथ छोड़ चली गई।

उधर कुमार रूपसेन नींद से जागा। उसने कई बार कुमारी को प्रिये! प्रिये! कह कर सम्बोधित किया परन्तु वहां से कुछ उत्तर नहीं मिला। अन्धकार के कारण कुमार ने सोचा कि सोती होगी इस लिये कोई उत्तर नहीं मिला। पुनः वह कनकवती को जगाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु यह उपाय भी निष्फल हुवा। जब कुमार ने इधर उधर देखा तो न वहां कुमारी को विद्यमान पाया और नाही अपनी चारों वस्तुओं को।

कुमार विस्मित हो विचारने लगा–"निद्रा ही अनर्थों की जड़ है, निद्रा से ही प्रमाद होता है। श्रेय को निद्रा नष्ट करती है तथा निद्रा ही संसार को बढ़ाती है"।

रूपसेन ने कुमारी की बारबार खोज की परन्तु कहीं भी कोई पता न चला। नितान्त उसके मन में यह विश्वास हो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गया कि कुमारी अपने माता पिता के कोप के कारण अपने घर लौट गई है। किन्तु उसने मेरी चारों वस्तुएं क्यों उठाईं ? उनके न होने से तो मुझे दुःख ही होगा। मैं कुछ और सोचता था परन्तु वह कुछ और ही कर गई।

थोड़ी देर के बाद कुमार ने सोचा कि वह भी मुझे मालिन की तरह धूर्त जान छोड़ भागी है। कुमार ने बहुत पश्चात्ताप किया और कहा-मैंने व्यर्थ ही उसको अपना भेद दिया और उसका विश्वास करके अपनी चारों वस्तुएं उसे दिखाईं क्यों कि स्त्रियों का कभी विश्वास न करना चाहिये।

नितान्त कुमार वहां से दोनों जड़ियें लेकर तथा स्वयं एक जड़ी सूंघ बन्दर बनकर कुछ दिनों के बाद कनकपुर के निकटवर्ती उसी बाग में आकर ठहरा। थोड़ी देर के बाद उसने दूसरी जड़ी सूंघी और आदमी बन चम्पा के वृक्ष के नीचे सो गया।

नित्य की तरह मालिन आज भी पुष्प लेने वाटिका में आई। चम्पा के वृक्ष के नीचे सोये हुए कुमार को देख कर हर्षित हो बोली "भ्रात! तू इतने दिन से कहां था, अथवा किसी लोभ के वश या किसी को मिलने गया था"। कुमार निद्रा से जागा और उसने अपना सब वृत्तान्त उसे कह सुनाया।

मालिन ने विस्मित हो कुमार से पूछा, कि मैं नित्य ही फूल लेकर कुमारी के पास जाती हूँ, वह कहीं नहीं गई। कुमार ने उत्तर में कहा; यह सब वृतान्त उसी रात्री का है-जब मैं तुम्हारे घर सोने नहीं आया था। मैं तो जङ्गल में सो गया था, परन्तु वह भाग आई। उसने मेरा सर्वस्व हर लिया तथा

विश्वास घात किया है। "अब मैं उसे विश्वास घात का फल देना चाहता हूँ" मालिन बोली–"अबला पर क्रोध करना ठीक नहीं, चींटी पर हमला क्या" ? कुमार ने एक बार फिर कुमारी से मिलने की इच्छा प्रकट की।

मालिन ने कुमार रूपसेन को बहुतेरा समझाया परन्तु उसने एक न मानी। मालिन ने फिर कहा, "कुमार ! पहिले तो तू पादुका प्रयाग से जासकता था अब तो वहां सात सौ मनुष्यों का पहिरा है। तो कैसे वहां तक जाना होगा ? कुमार ने उत्तर दिया" भगिनी ! मेरे पास एकयुक्ति और है जो तू मेरा कहा करे तो मैं तेरे आगे प्रकट करूं। उस भेद को किसी के आगे प्रकट न करना, क्यों कि स्त्रियों के हृदय गम्भीर नहीं होते। इसी कारण से मैं तुझे बार बार कहता हूं। इस पर मालिन ने कहा–"भाई ! सब स्त्रियें एक सी नहीं होतीं। इस लिये संकोच को त्याग कर पूर्णतया कह डाल। मैं हर तरह तेरी मदद करने को प्रस्तुत हूँ।"

कुमार को मालिन पर पूरा भरोसा होगया। कहने लगा कि मैं बन्दर बन जाता हूँ। तू मुझे लेकर कुमारी कनकवती के पास जा। संभव है वह मुझे अपनी क्रीड़ा के निमित्त अपने पास रखले। परन्तु तू मुझे एक दम हो ना देदेना। इस तरह करने से वह तुझे अधिक धन देगी और मेरा भी कार्य सिद्धि हो जावेगी।

मालिन ने कुमार रूपसेन की बात को मान लिया। कुमार भी उसी क्षण बन्दर बन गया, मालिन उसे लेकर अपने घर गई और उसे अच्छे वस्त्र-भूषण पहिना कर कुमारी के पास लेगई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jun Gun Aaradhak Trust

कुमारी ने उस बन्दर को देखते ही कहा–"मालिन ? यह बन्दर तो तू मुझे दे दे। मैं इससे खेला करूंगी"। मालिन ने देने से बहुत इनकार किया परन्तु उसने एक न मानी।

कुमारी ने मालिन को एक दिनार और एक रेशमी साड़ी दे कर वह बन्दर ले लिया। मालिन भी बन्दर को छोड़ खुशी २ अपने घर चली आई। कुमारी रात भर उस बन्दर से खेलती रही और रात्रि को भी उसे अपने साथ ही कमरे में ले गई।

कुमार रूपी बन्दर ने भी अच्छा अवसर जान तुरन्त ही अपना मनुष्य रूप धारण किया। कुमारी ने जब कुमार रूपसेन को अपने सामने खड़ा देखा तो उस को बहुत आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी–"क्या मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ ? जब कुमारी को विश्वास होगया तो कुमारी लज्जा से शिर नीचा कर तुरन्त ही कुमार के पांवों पर गिरपड़ी, और कातर स्वर में कहने लगी, "स्वामिन् ! आप मेरे अपराधों को क्षमा करो। मुझ से बड़ी भूल हुई। जो मैं आप को जङ्गल में छोड़कर चली आई। फिर कभी ऐसी भूल न करूंगी। प्राणनाथ ! मुझ किंकरी को अवश्य ही एक बार क्षमा करें"।

कुमारी के कहने सुनने का कुमार के दिल पर कोई असर न हुआ। वह कनकवती से बोला–बहुत कहने सुनने से क्या होता है। बनावटी स्नेह से कभी सङ्कल्प सिद्धि नहीं होती। सच्चा प्रेम बहुत दुर्लभ है।

कुमारी रूपसेन के चरणों को पकड़ कर फिर बोली–नाथ ! आप जैसे सत्पुरुष अपराधियों पर भी क्रोध नहीं किया करते। मैंने अवश्य ही अपराध किया है, हे स्वामिन् !

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मैं आपके चरणों में पड़ कर बार बार क्षमा मांगती हूं, आप मेरे अपराध को क्षमा करें।

कुमार बोला—"यह सब भवितव्यता है इस में तेरा क्या दोष है"। यदि तू मेरी आज्ञा मानती है तो यह औषधि अपने हाथ में लेकर इसे सूंघ-इस के सूंघने से हमारा प्रेम बराबर बना रहेगा। कुमारी कनकवती ने ज्यों ही जड़ी को सूंघा त्यों ही वह बानरी दीख पड़ने लगी।

रूपसेन ने तुरन्त ही बन्दरी को एक स्तम्भ से बांध दिया। घर में से अपनी चारों वस्तुएं लेकर पादुका प्रयोग से मालिन के घर आगया और प्रातः काल ही अपनी सब वस्तुएं लेकर वनको चलदिया।

कुमार ने वन में जाकर कुछ सोचा विचारा और गुदड़ी आदि बस्तुओं को सम्भाल कर रक्खा। अपना वेष योगियों का बनाया और अवधूतरूप से विचरने लगा।

उधर प्रातः काल ही दासियें नित्य की तरह आज भी कुमारी के महल में गईं। वहां कुमारी के स्थान पर बानरी को देख कर आश्चर्य करने लगीं।

दुःखित दासियों ने तुरन्त ही राजा के सम्मुख आकर कहा, महाराज! आज कुमारी कनकवती अपने आवास में नहीं है। उसके स्थान पर एक बन्दरिया बन्ध रही है। राजा तुरन्त ही कुमारी के महल में गया और बन्दरी को देखकर सोचने लगा-"क्या यह दृष्टि दोष हुआ है, अथवा किसी ने छल से ऐसा किया है, या किसी ने शाप दे दिया है। क्या

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किसी ने मन्त्र द्वारा इसे छल से वानरी बना दिया या किसी देवता ने वैर से ऐसा किया है। राजा ने सब दासियों को बुला कर पूछा—क्या कल कोई कुमारी के पास आया था।

सब दासियों ने तुरन्त ही उत्तर दिया, अन्नदाता ? आगे यहां मालिन नित्य ही अकेली आती थी, परन्तु जब वह कल आई थी तो उस के साथ एक बन्दर का बच्चा था और नाही उसके अतिरिक्त यहां कोई आता जाता था।

राजा तुरन्त ही सभा में आया और अपने मन्त्री बुद्धि सागर से सब कथा कह सुनाई और बोला—कहीं मालिन की कुछ शरारत न हो। मालिन को इसी समय सभा में उपस्थित करो। आज्ञा की देर थी मालिन तुरन्त ही सभा में कांपती हुई पहुंची "राजा मेरा क्या करेगा मैं किस लिये बुलाई गई हूँ" मालिन वहां बैठी यही सोचती रही।

राजा ने क्रोधित हो मालिन से पूछा—अरी दुष्टे ? सत्य बता यह इस तरह के छल कहां से सीखे हैं। और भी तो सारा नगर था, मेरे घर में ही तूने ऐसा क्यों किया।

डर से कांपती हुई मालिन ने उत्तर दिया। हे राजेन्द्र ! मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। राजा ने पूछा "क्या कल तूने कुमारी को कोई बन्दर दिया था" ? मालिन बोली महाराज जब मैं कल अपनी वाटिका में पुष्प लेने गई थी तो मुझे वहां से एक बन्दर मिला था, वह मुझ से कुमारी ने खेलने के लिये लेलिया था इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती।

मेरी पुत्री को वानर मंगाने की, क्या आवश्यकता थी, इस में सब तेरा ही दोष है। तूही दुष्ट पापिनी है। जो दण्ड

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चोर को दिया जाता है वही तेरे लिये युक्त है।

राजा के कठोर बचनों से मालिन का हृदय कांप उठा। वह सोचने लगी, कि मुझ पर आज भाग्य की क्रूरता है, जिस से मुझे यह दोष लग रहा है।

राजा के क्रोध को बढ़ता देख मन्त्री बोला–महाराज! आप क्यों पाप करते हो पहिले भी आपने एक परोपकारी विदेशी कुमार को मार दिया है। अब यह दूसरा स्त्री हत्या का पाप आप क्यों अपने ऊपर लेते हैं।

राजा ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा हे सचिव! आप जो कुछ कहते हो सब यथार्थ सत्य है। परन्तु कुमारी जीवित हो जावे तो चित में शान्ति हो। इस लिये जिस दुष्ट ने यह पातक किया है उसे आप ढूण्ड निकालिये।

मन्त्री ने कहा राजेन्द्र! मालिन कहती है कि वह बन्दर किसी योगी का छोड़ा हुआ था। इससे प्रतीत होता है कि ऐसे कुकर्म करने वाले योगी ही हैं। वे धूर्त्त ही देश विदेश में फिरते हैं। तथा मन्त्र, तन्त्र, से लोगों को कष्ट देते और छलते हैं। इन धूर्त्त योगियों का कभी विश्वास न करना चाहिये।

राजा ने अपने सेवकों को बुलाकर आज्ञा दी; "जाओ देश विदेश में जहां भी कोई योगी मिले उसे पकड़ कर लाओ"

हज़ारों योगी बन्दी गृह में पड़े हा हा कार और परस्पर मन्त्रणा करने लगे, कि राजा ने हमें व्यर्थ पकड़ा है, न जाने यह हमारा क्या करेगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

एक दिन राजा स्वयं वहां गया और योगियों से पूछने लगा, "योगियो ! तुम सदा देश विदेश फिरते हो। किसी योगी ने मेरी पुत्री को वानरी बना दिया है। क्या तुम उसे पुन: वानरी से कन्या बना सकते हो"। वे बोले महाराज ! हम तो नित्य ही भिक्षा माङ्ग कर खाते हैं, हमें तो बिच्छू काटे तक का उपाय नहीं आता, यह महान् कार्य तो हम से क्यों कर हो सकता है।

राजा ने अपने सेवकों को बुलाया और पूछा क्या तुम सब योगियों को पकड़ लाये हो। उत्तर मिला–"महाराज एक योगी के सिवाये सब योगी आगये हैं" वह ऐसा घमण्डी योगी कहां है जो मेरे बुलाने पर भी नहीं आता। सेवकों ने कहा राजन् ! वह चौराहे पर ध्यान लगाये बैठा है। वह निर्धनों को स्वर्ण मुद्रा बांट रहा है। बहुत से आदमी उसके पास बैठे हैं। तथा वह योगी लोगों को (परोपकार करो) यह उपदेश दे रहा है।

राजा कुपित हो बोला, जो मेरी आज्ञा को नहीं मानता वह अवश्य ही मारने योग्य है। मन्त्री भी पास ही खड़ा था। बोला, महाराज ! योगियों पर क्रोध करना उचित नहीं। आप राजा हो वह योगी है। यदि आज्ञा हो तो मैं उसे यहां लाने का प्रयत्न करूं।

राजा की आज्ञा से मन्त्री अपना थोड़ा सा परिवार लेकर योगी की सेवा में गया। योगी ने भी मन्त्री का यथोचित सम्मान किया। और बैठने को स्थान दिया।

मन्त्री ने हाथ जोड़कर निवेदन किया, महाराज ! आप

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सब के पूज्य हो इस लिये आप मुझ ग़रीब के घर की शोभा बढ़ावें। तथा अपने चरणों से उसे पवित्र करें।

राजा ने भी आप को स्मरण किया है अतः आप सभा में चलकर भी अवश्य अपना कला कौशल दिखावें। योगी ने मन्त्री को उत्तर दिया—हम योगियों का राजा से क्या प्रयोजन है। दूसरे वह राजा कहलाने के योग्य नहीं। राजा वही कहला सकता है, जो कि न्याय तथा अन्याय को जानता हो। उसही के दर्शन करने योग्य हैं। सचिव! यदि अन्याय करते हुए राजा को मन्त्री नहीं रोकता—तो उस मन्त्री को भी बहुत पाप लगता है।

मन्त्री ने योगी की बात सुनकर पूछा, महाराज! हमारे राजा ने कौनसा पाप किया है। योगी ने उत्तर दिया—मंत्रीवर्य्य! जो योगीजन देश विदेश फिरते हैं, भिक्षा मांग कर निर्वाह करते हैं। राजा ने उनको किस लिये चोरों की तरह बन्दी गृह में डाल रक्खा है। राजा का इस प्रकार का अन्याय कैसे सहन हो सकता है? मन्त्री जी तुम अभी राजा के पास जाओ। योगी (कुमार) की बात सुनकर मन्त्री तुरन्त ही राजा के पास जाकर बोला—राजेन्द्र! वह योगी बहुत दयावान्, विद्वान तथ दानी है। इस लिये उसका तो मान करना ही उचित है तथा इन योगियों को छोड़ देना ही बेहतर है। अतः इन को जल्दी छोड़ दें।

योगी की आज्ञा पाते ही राजा ने सब योगियों को छोड़ दिया। छूटे हुए सब योगी राजा को आशीर्वाद देकर बन में चलेगये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　Jun Gun Aaradhak Trust

राज ने योगी की सेवा में अपने अङ्गरक्षक भेजे, योगी ने दूर से ही नौकर को देखकर कहा, "आगे मत आओ, वहीं खड़े रहो ! यदि मेरी ओर बढ़ोगे तो सब को भस्म करदूंगा"। विचारे अङ्ग रक्षक दूर ही से योगी को बुलाने लगे। क्रोधित हो योगी ने उत्तर दिया, जाओ राजा से कह दो-"कि यदि तुम्हें योगी से कुछ कार्य्य है, तो आप ही सवारी लेकर हमारी सेवा में आयें"। नौकरों ने वेसे ही राजा के आगे निवेदन कर दिया।

नौकरों की बात सुनकर राजा तुरन्त ही परिवार सहित योगी की सेवा में गया। नमस्कार करक उसकी स्तुति की और योगी के प्रति बोला-महाराज ! आप सब के पूज्य हो इस लिये मुझ ग़रीव के घर की अवश्य शोभा बढ़ावें। योगीने राजा को उचित उत्तर दिया। और राजा की प्रार्थना स्वीकार कर उसके साथ चलने को तैयार हुआ"।

राजा ने योगी को सजे हुए हाथी पर सवार किया और अपने घर ले आया और पूछने लगा--स्वामिन् क्या आपके पास कोई ऐसी जड़ी बूटी या कौतुक कारिणी विद्या है। जिसके कारण मेरी पुत्री अच्छी हो जावे। क्यों कि मेरी पुत्री को किसी ने वानरी बना दिया है।

योगी ने राजा से प्रश्न किया- यदि वह अच्छी हो जावे तो आप मुझे क्या देंगे। राजा ने कहा-पांच सौ दीनार तथा एक ग्राम से आपकी पूजा करूंगा। योगी ने कहा यदि तुम अपनी कन्या का विवाह हमारे साथ करदो तो हम उसे अच्छा कर सकते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा विवाह का नाम सुनते ही चिन्ता के सागर में डूब गया और कहने लगा कि इस तरफ खाई है तो उस तरफ शेर है। क्या करूं, यदि हां करता हूँ तो योगी के साथ पुत्री का पाणिग्रहण होता है। संसार हास्य करेगा, जवाब देता हूँ तो पुत्री जैसी को तैसी रहती है।

राजा खिन्न चित्त होकर मन्त्री से पूछने लगा। मन्त्री ने उत्तर दिया--महाराज! आप विवाह करने से इनकार न करो, जब कनकवती तथावत् हो जावेगी, तो देखा जावेगा। मन्त्री के समझाने से राजा ने योगी की बात को स्वीकार कर लिया।

राजा, मन्त्री, योगी, तीनों ही कुमारी कनकवती के महल की ओर चल दिये। मार्ग में योगी ने राजा और मन्त्री से फिर पूछा–देखो! यदि तुम्हारी इच्छा मेरा पाणिग्रहण कुमारी से करने की हो तो हम उसे वानरी को कुमारी बनावें, अन्यथा नहीं।

राजा और मन्त्री योगी के पीछे 'हां महाराज' 'हां महाराज' कहते जाते थे। एक जगह योगी ने रुक कर राजा और मन्त्री से कहा–"यदि कोई मेरे पढ़े मन्त्र को सुनेगा, वह तुरन्त ही पाषाण–शिला हो जावेगा। यह सुनते ही राजा तो तुरन्त अपनी सभा में लौट आया। परन्तु मन्त्री योगी के पीछे २ ही चलता रहा। जब महल के द्वार पर ही जा पहुंचे तो योगी ने मन्त्री से फिर कहा—मन्त्रि! तू मूर्ख प्रतीत होता है। यदि तू मेरे पठित मन्त्र को सुनेगा तो तुरन्त ही शिला रूप हो जावेगा। बता! फिर तू क्या करेगा?" मन्त्री ने हठ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　　Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वक कहा मेरा शरीर वज्र का है इस का क्या बिगड़ सकता है। योगी ने कहा–अरे मूढ़! क्यों मरने से नहीं डरता? मन्त्रों में अपूर्व शक्ति होती है।

\+ \+ \+ \+

योगी के कहने से मन्त्री को ज्ञान हुआ तथा वह तुरन्त ही लौट आया।

योगी (कुमार रूपसेन) अकेला ही कुमारी कनकवती के भवन में गया, वहां बैठी हुई सब दासियों को बाहिर निकाल दिया।

जब कुमार ने देखा कि अब यहां तीसरा कोई नहीं तो उसने बानरी के आगे दूसरी जड़ी रखदी। वह तुरन्त ही कुमारी कनकवती बन गई। कुमारी ने तुरन्त ही अपनी सखियों को अपने निकट बुला लिया। सब दासियें कुमारी को जैसी की तैसी देख कर बहुत प्रसन्न हुईं और कहने लगीं—हे सखि! तू तो मर्कटी होगई थी, इस योगी ने तेरी जान बचाई है।

दासियें तुरन्त ही राजा के पास हर्ष संवाद सुनाने भागीं। इधर कुमारी हाथ जोड़ कर कुमार रूपसेन (योगी) के पाओं पड़ कर कहने लगी, स्वामिन्! आज से पीछे मुझ दासी पर सदा ही कृपा दृष्टि रखना। कुमारी ने बहुत प्रार्थना की, परन्तु कुमार ने कुमारी की ओर एक बार भी न देखा।

इधर राजा दासियों की बात को सुन. दुःख सुख दोनों के जाल में फंसा हुआ कुमारी के महल में आया। राजा को देखते ही योगी ने कहा–राजेन्द्र! मैंने तेरी पुत्री को सजग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर दिया है। बताओ अब तुम्हारी क्या सलाह है! राजा उसी क्षण चिन्ता सागर में गोते खाता हुआ सोचने लगा-यह योगी अज्ञात कुल है, हम इसका घर दर कुछ नहीं जानते फिर इसे क्यों कर अपनी लड़की दें?

राजा ने तुरन्त ही मन्त्री को बुला कर सम्मति ली। मन्त्री ने योगी से पूछा, हे योगि राज! आप का स्थान कहां है तथा क्या जाति, क्या कुल, क्या धर्म और इस छोटी अवस्था में योग लेने का क्या कारण है?

मन्त्री की बात सुन कर योगी ने कहा-आप का जाति धर्म पूछने से क्या प्रयोजन है। राजा ने पहिले कन्या दान की प्रतिज्ञा की है। मैं भी सिवाये उसके कुछ नहीं मांगता।

सच्चे आदमियों का बचन अन्यथा नहीं हुआ करता। मन्त्री ने फिर कहा, योगिराज! आप तो सर्वोत्तम तथा परोपकारी हो। गुणों के जानने वाले गुणों की खान हो। हम आपके लक्षणों से हो आपके धर्म कुल जाति का अनुमान कर सकते हैं। यद्यपि हम आपके गुणों को अच्छी तरह जानते हैं। तो भी आप राजा के संशय को दूर करने के लिये अपना स्थान तथा कुल बताही दें।

योगियों का पहिनावा पहिने हुए कुमार रूपसेन ने मन्त्री की बातों से प्रसन्न होकर अपनी आद्योपांत कथा कह सुनाई और कहा कि मैं राजा मन्मथ का बड़ा पुत्र कुमार रूपसेन हूँ।

कुमार के वृत्तान्त से सब ही बहुत प्रसन्न हुए। राजा ने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उसी समय ज्योतिषियों को बुला कर शुभ लग्न निकलवाया, और अपनी पुत्री कनकवती का रूपसेन से विवाह कर दिया।

कुमार रूपसेन वहां थोड़े दिन रहा, फिर वह अपने नगर के प्रति चल दिया।

कुछ दिनों चलने के बाद कुमार रूपसेन स्त्री सहित अपने नगर में पहुंचा। घर में जाकर कुमार रूपसेन ने अपने माता पिता के चरणों में नमस्कार किया। माता पिता ने उसे गले से लगा लिया॥

नगर भर में रूपसेन के आने की खबर हो गई। लोग राजा मन्मथ को वधाई देने के लिये आने लगे। राजा ने बड़ा उत्सव मनाया याचकों को बहुत धन दिया।

कुमार रूपसेन पद्मावती देवी की सहायता से तथा जैनाचार्यों के कथनानुसार अपनी पत्नी स.हेत बारह बर्ष के बाद अपने नगर में आया था।

राजा जैनाचार्यों के दर्शन करने के लिये परिवार सहित बन में गये। गुरुओं ने राजा मन्मथ को यथोचित उपदेश देते हुये कहा, राजन्! सुन:—

"दुलभं मानुषं जन्म-दुलभं श्रावकं कुलम्-
दुलंभा धर्मसामग्री दुलभा धर्म वासना"।

अर्थात—हे राजन्! संसार में मनुष्य जन्म होना दुर्लभ है तिस पर भी श्रावक कुल में पैदा होना तथा धर्म की सामग्री तथा धर्म में बुद्धि रखना तो अत्यन्त ही दुर्लभ है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

संसार सागर से पार उतर ने के लिये श्री शत्रुञ्जय तीर्थ यात्रा भी दुर्लभ है। यदि कोई उस यात्रा को कर पाता है तो संसार के आवागमन से छूट जाता है। शास्त्र कारों का कथन है:—

"एकैकस्मिन् पदेदत्ते-शत्रुंजय गिरिं प्रति-
भव कोटि सहस्राणां पातकानि प्रयान्ति हि"

अर्थात्—शत्रुंजय पर्वत तीर्थ की ओर एक २ पद रखने से करोड़ों ही भवों में किये हुये पातक दूर हो जाते हैं॥

श्री तीर्थ की यात्रा करने से मैल नहीं रहती। तथा तीर्थों के भ्रमण से जीव संसार में नहीं भटकता। तीर्थों पर खर्च करने से लक्ष्मी बढ़ती है। तीर्थों के अर्चन से किसी कर्म का बन्धन नहीं रहता।

श्री जैनाचार्य ने और भी बहुत से उपदेश दिये। राजा मन्मथ ने भी दत्त चित्त होकर उपदेश सुने और उसी वक्त प्रतिज्ञा की, कि महाराज! मैं अवश्य ही तीर्थ यात्रा करूंगा। राजा वहां से लौटकर अपने घर आया, तथा दूसरे दिन ही परिवार सहित तीर्थ यात्रा को चला गया।

राजा मन्मथ रास्ते में अनेक स्थानों में जिन पूजा आदि महोत्सवों को करता हुआ; श्री शत्रुंजय पर्वत पर पहुंच गया। राजा ने परिवार सहित तीर्थ यात्रा की। श्री युगादि देव के मन्दिर में स्नात्रादि करके अष्टाह्निक (आठ दिन) महोत्सव किया और वहां बहुत से वस्त्राभूषण दान दिये। श्री चतुर्विध संघ की भक्ति भावना से पूजा की।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दैवयोग से वहां राजा मन्मथ के पेट में थोड़ा सा दर्द उत्पन्न हुआ। राजा ने प्रभु श्री युगादि देवका ध्यान किया। उसके प्राण शान्त हो गये। राजा सिद्धक्षेत्र में प्राणत्यागने के कारण सौधर्म लोक को प्राप्त हुआ।

कुमार रूपसेन ने अपने पिता की उत्तर क्रिया की और फिर वह परिवार सहित अपने नगर को वापिस चला आया।

प्रधान मन्त्रियों ने अच्छे मुहूर्त में कुमार रूपसेन का राज्याभिषेक कर दिया। अन्य राजाओं ने भी बहुत से हाथी घोड़े तथा वस्त्र भूषण उपहार में दिये। "राजा रूपसेन चिर काल तक न्याय से प्रजा पालन करता रहा"

एकदा लीलावन में बहुत से जैन मुनि पधारे। राजा रूपसेन भी उनके दर्शन करने के लिये वहां गया। गुरुओं को नमस्कार करके धर्म देशना सुनो। फिर बोला–महाराज ! मेरी एक शंका को निवृत्त करें। वह शंका यह है।

'मैं (राजा रूपसेन) किस कर्म से बारह वर्ष वन में रहा ? तथा किस कर्म से मुझे चार दिव्य वस्तुएं प्राप्त हुई ? किस कर्म से मुझे परदेश में भी बहुत सा धन मिला और किस कर्म से मुझे अच्छी स्त्री प्राप्त हुई ? यह सब मुझ दास पर कृपा करके कहियेगा।

मुनियों ने कहा–राजन् यदि तू अपना पूर्व वृत्तान्त सुनना चाहता है तो सुन। वह इस तरह से है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

। रूपसेन का पूर्व वृत्तान्त ।

तिलकपुर में तू 'सुन्दर' नाम वाला एक कुटम्बी था मारुता तेरी पत्नी का नाम था। और तू खेती बाड़ी से अपना निर्वाह किया करता था। तुम्हारे बहुत से पुत्र पोते थे।

एकदा तेरे खेत के निकट सहकार वृक्ष के नीचे कोई सिद्धजन आकर बैठा। तूने उस सिद्धजन की एक मास तक सेवा की। इस पर सिद्धराज ने प्रसन्न होकर तुझे रूप-परिवर्तिनी विद्या दी।

उस विद्या के प्रभाव से तू सब कार्य करता रहा। तूने दीनों को बहुत दान दिया। इसके बाद एकदा-तेरे क्षेत्र के नज़दीक वाले वनमें बहुत से जैन मुनि आये। तू भी परिवार सहित उनके दर्शन करने गया, तथा उन मुनियों का उपदेश श्रवण करने के लिये उन के पास बैठ गया। मुनियों ने तुझे दया, दान धर्मादि का उपदेश देते हुए कहा--

"खेती करने तथा हल बाहने से बहुत पाप होते हैं" इस पर तूने कहा "गुरु महाराज ! मेरा बहुत सा परिवार है। सो मैं, खेती के बिना उनका पालन पोषण कैसे करूं ?"

मुनियों ने कहा कि तू कोई एक नियम ग्रहण कर, जिससे तुझे धर्म का लाभ हो। इस पर तूने कहा-गुरुजी! आज से मैं जिन मन्दिर में जिन दर्शन करके भोजन किया करूंगा, तथा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यथाशक्ति सुपात्रदान किया करूंगा। ज्ञात-जीव-हिंसा तथा रात्री में भोजन नहीं करूंगा"।

तब गुरूओं ने तुझे वे नियम दिये और कहा-इन नियमों के पालने से तुझे इस लोक और परलोक में सुख होगा।

तूने इन नियमों को पूर्णतया सुना और पाप से डर कर पालन भी किया।

इस के वाद तू एक बार कहीं जारहा था। मार्ग में तुझे एक साधु मिला। तू ने उसे गुड़ घी में पके हुए पूड़े दिये। उस दान से तुझे हर्ष प्राप्त हुआ क्यों कि वह दान सुपात्र को दिया गया था।

एक बार तेरा ससुर तेरी पत्नी का लियाने के लिये तेरे घर आया, परन्तु तूने उसे जाने की आज्ञा न दी। इस पर वह बहुत रोने चिल्लाने लगी। तूने क्रोधित हो अपने ससुर को रूप परवर्तिनी विद्या से बछड़ा बना कर कीले से बांध दिया और आप क्षेत्र में चला गया। बारह घण्टे के बाद जब तू अपने घर आया तो तेरी पत्नी ने पूछा, मेरा पिता कहां है। तूने जवाब दिया--वह अपने घर चला गया है।

पिता के गमन को सुन कर तेरी स्त्री रोकर कहने लगी, मुझे मेरे पिता के पास अवश्य भेजदें, यदि न भेजोगे तो मैं अन्न जल न करूंगी। बार बार कहने पर तूने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। उसके पिता को वैसा ही करके उसके साथ अपनी पत्नी को रवाना कर दिया। तू ने बहुत दान तथा परोपकार किये और साधुओं की सेवा की।

काल करने के बाद तू राजा मन्मथ के यहां पुत्र हुआ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

80357

और तेरी स्त्री भी बहुत पुण्य उपार्जन करके कनक पुर के राजा के गृह में कनकवती हुई। तुम्हारा परस्पर प्रेम था, इस ही कारण वह अब भी है।

जैसे तू ने अपने ससुर को बारह घण्टे बांध कर रक्खा था. उसके बदले तुझे बारह वर्ष तक पितृ-वियोग हुआ तथा चार नियम पालन करने से तुझे कन्था आदि चार वस्तुएं मिलीं। दान करने से तुझे हाथी घोड़े अर्थ सम्पत्ति तथा सुन्दर स्त्री मिली।

राजा रूपसेन गुरु के पास से श्राद्ध (गृहस्थ) धर्म को ग्रहण कर अपने घर आया और चारों नियमों का पालन करता रहा।

एकदा राजा रूपसेन को विषम ज्वार चढ़ आया। बहुत से उपाय किये गये, परन्तु सब व्यर्थ रहे। इसी समय दूर देश से एक वैद्य (देव) आया और बोला-महाराज! इस ज्वार को हटाने के लिये एक बली देनी पड़ेगी। परन्तु राजा ने उसकी बात को न जानते हुये कहा "मैं अपने नियम को प्राणों के लिये भंग नहीं कर सकता"।

राजा रूपसेन का नियम भङ्ग न होते देख वह देव प्रकट होकर बोला--हे राजन्! तेरे नियम पालने की प्रशंसा इन्द्रसभा में हुई थी, मैं तेरी परीक्षा करने के लिये आया था, सो तुझे नियम में दृढ़ देख कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

"इस पक्ष के अन्दर तू हाथी के ऊपर से गिरेगा और तेरी मृत्यु हो जावेगी"।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यह कह कर वह देवता अन्तर्धा हो गया। राजा रूपसेन भी कहे हुए दिन हाथी पर सवार हो कर कहीं जारहा था तो हाथी ने उसे गिरा दिया और राजा रूपसेन शुभ ध्यान पूर्वक देह त्याग कर देवता हुआ।

उत्तर कथन

सब मनुष्यों को रूपसेन की तरह नियम पालन करने चाहियें :—

अथवा—

"येपालयन्ति नियमान् परिपूर्णान् रूपसेन नृपतिरिव—
ते सुख लक्ष्मी भाजः पदे पदे स्युर्जन श्लाघ्याः।

अर्थात्—जो मनुष्य राजा रूपसेन की तरह नियमों का पालन करते हैं, वे सुख तथा लक्ष्मी के पात्र होकर पद पद पर प्रशंसा को प्राप्त होते हैं।

* इति *

आ श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्री आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसायटी

अम्बाला शहर

की

नियमावली ।

१—इसका मेम्बर हर एक हो सकता है ।

२—फ़ीस मेम्बरी कम से कम २) वार्षिक है, अधिक देनेका हरएक को अधिकार है। फ़ीस अगाऊ लीजाती है। जो महाशय एक साथ सोसायटी को ५०) रुपये देंगे, वे इसके लाइफ़ मेम्बर समझे जावेंगे। उनसे वार्षिक चन्दा कुछ नहीं लिया [illegible]

३—इ[illegible] जनवरी से आरंभ होता है। [illegible] चाहे किसी मास में हों, परन्[illegible] से ३१ दिसम्बर तक का लिय[illegible]

Serving JinShasan
080357
gyanmandir@kobatirth.org

४—जो महाशय अपने खर्च से कोई ट्रैक्ट छपवा कर सोसायटी द्वारा विना मूल्य वितीर्ण कराना चाहें, उनका नाम ट्रैक्ट पर छपवाया जायगा ।

५—जो ट्रैक्ट यह सोसायटी छपवाया करेगी वे हर एक मेम्बर के पास बिना मूल्य भेजे जाया करेंगे ।

मन्त्री ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust